डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव की ग़ज़लें



डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव

जन्मतिथि: 15 सितंबर 1946

जन्म स्थान: विदिशा (म.प्र.)

प्रकाशित कृतियाँ

1. ट्यूबेक्टोमी एण्ड कास्टम (अंग्रेजी, 1980)
2. है प्यास अभी (गजल संग्रह)
3.सन्नाटा गहरा है, (गजल संग्रह)
4.आए न बालम (व्यंग्य संग्रह)
5.बाइज्जत बरी (व्यंग्य संग्रह)
6.हड़कंप (व्यंग्य संग्रह)
7.अखिलम, मधुरम (काव्य संग्रह)
8. प्रतिरोधक क्षमता (मेडिकल साइंस)
9. प्रति उत्तर(काव्य संग्रह)
10 मेरे सांई
11 गीता के औपनिषधिक आधार
12 देशी-विदेशी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेख प्रकाशित

सम्मान- पुरस्कारः विभिन्न शीर्ष स्तरीय संस्थाओं से पुरस्कृत एंव सम्मानित

सम्प्रति: 1.भूतपूर्व सदस्य: मानव अधिकार आयोग

2.सदस्य: किशोर न्यायपीठ,छिन्दवाडा

3. शल्य चिकित्सक,

4. सेवानिवृत्ति सीएमओ (मुख्य स्वास्थ्य एंव चिकित्सा अधिकारी)

1 संरक्षक - पत्रकारिता कोश मंच छिंदवाड़ा

2. उपाध्यक्ष - जिला रेडकास समिति सोसाइटी छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

3. आजीवन सदस्य इंडियन मेडिकल एसोसिएशन

4. मानव तंत्र मानव अधिकार आयोग
अन्य - स्वतंत्र लेखन राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में,
संपर्क - 171 नोनिया करबल, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
पिन 480001

ग़ज़लें

बहुत था नज़र फेरकर जाना।
नहीं कहना पड़ा निकल जाना।

बेदखल हो गए अन्धेरे में,
धनी है रात शहर अनजाना।

कहाॅ बेचंू शरीर के टुकड़े,
बहुत मुश्किल है पेट भर पाना ।

सिलसिला लग गया थपेड़ों का,
जो हुआ घर से सड़क पर आना।

एक दर बन्द जो हुआ "कौशल",
पूरी बस्ती ने नहीं पहचाना ।

बहुत था नज़र फेरकर जाना।
नहीं कहना पड़ा निकल जाना।

बेदखल हो गए अन्धेरे में,
धनी है रात शहर अनजाना।

कहाॅ बेचंू शरीर के टुकड़े,

बहुत मुश्किल है पेट भर पाना ।

सिलसिला लग गया थपेड़ों का,
जो हुआ घर से सड़क पर आना।

एक दर बन्द जो हुआ "कौशल",
पूरी बस्ती ने नहीं पहचाना ।

कभी आते थे अब वो मनाने नहीं आते।
बीत गये फिर वो जमाने नहीं आते।

जो गुफ्तगू को तरसते थे गये जमाने में,
जलीं कटी भी अब वो सुनाने नहीं आते।

जिन्होंने आग लगाई थी जलाने के लिये,
तमाश बीन है वो बुझाने नहीं आते।

झुर्रियाॅं देख के लोरी भी भूल जाता हूॅ ,
ठंूठ पर परिन्दें चहचहाने नहीं आते।

पड़ोसियों से खबर भेजते है कौशल को,
वो दिल के दर्द तक को बताने नहीं आते।

खिड़की भर गलती पर है।
झुका मोहल्ले का सर है।

कोने तक पर दख़ल नहीं,
खुशफहमी अपना घर है।

थाम रखा है बांहों ने,
छत कहने को सर पर है.।

लड़की एम ए पास हुई,
उनका कहना सुन्दर है।

बस्ती घर के बाहर है,
घर बस्ती के अन्दर है।

जिसने बदन नहीं नापा,
"कौशल" ऐसा शायर है।

तुम्हें बतलायें हम क्यों क्या हुआ है,
हुआ जो कुछ भी है अच्छा हुआ है।

दुआ पोशीदा है हर बददुआ में,
दुआ बेवक्त में एक बददुआ है।

लगाकर खुद की बाजी एक देखो,
मुहब्बत एक इबादत है जुआ है।

बुतों से दोस्ती क्या दुश्मनी क्या,
इधर खाई वहाॅ पर एक कुआं है।

न जाने छोड़ कब उड़ जाये, कौशल,
खुले पिन्जरे में एक बैठा सुआ है।

गुल मशीनों में खिलाया जाए,
किसी योगी को रूलाया जाए।

ध्यान व्यवधान के चले पीछे,
ऐसा चक्कर भी चलाया जाए।

धरा सूरज के पास में बैठे,
गोद में चांद खिलाया जाए।

खिंचे खिंचे न रहें चाहत में,
लपककर हाथ मिलाया जाए।

उसकी तस्वीर के आगे "कौशल",
गुज़रे लम्हों में भी जाया जाए।

बादल गरज रहे हैं छतों को सुधार दें।
एसा न हो बरस के वे नक्शा बिगाड़ दें

वापिस नहीं मिलेगा हमें ये यकीन है,
खैरात में ले जाइये हम क्यों उधार दें।

रफ्तार तेज है तो सड़क का ख्याल रख,
गड्ढे न कहीं पटरी से एक दम उतार दें।

दे दुआ, या बद्दुआ या प्यार की नजर,
जो भी हमें देना है आप बेशुमार दें।

कुछ वो गरूर में है तो कुछ मैं भी कम नहीं,
अब आप ही मेरे लिये उनको पुकार दें।

मिलकर टकराते रहिये।

मिलना टरकाते रहिये।

साफगोई कैसी किबला,
पेंचदार बातें कहिये।

अपने पत्ते ढ़के रहें,

उनके खुलवातें रहिये।

जब तक एक बंूद भी हो,
चरखी चलवाते रहिये।

घर में “कौशल” चैन रहे,
सबको लड़वाते रहिये।

कभी कागज, कभी कलम, तो कभी वक्त की कमी हुई है।
वाज गजलों को मयस्सर नहीं जमीं हुई है।

राह में जब भी तरक्की के आये हैं मौके,
घर से खत आये है, लौट आओं फिर गमी हुई है।

ढ़ेर में कचरे के जब कोई तलाशता है वजूद,
आंख में आग, धुआं और फिर नमी हुई है।

नुमाइन्दों में सियासत में फर्क है पगले,
बदल कर नुमाइन्दें, सियासत वह जमी हुई है।

तुमने देखा तो तार तन गये फ़िजां के भी,
तुमने छेड़ा तो झनझना के सर गमी हुई है।

साहब गुस्सा लगता है।
बस इस्तीफा रस्ता है।

प्याज हुई मंहगी तो क्या,
चिप का टुकड़ा सस्ता है।

बच्चा आठ किलो का है,
बीस किलो का बस्ता है।

दारू थोड़ी मंहगी है,
खून जरा सा सस्ता है।

पहली को तनखा, कौशल,
दो को हालत खस्ता है।

खुदा हाफिज मुझे कहने सहारा आ गया मेरा।
लगा हूँ डूबने मैं अब किनारा आ गया मेरा।

कि कर लूँ बन्द आंखे इस कदर दुनिया नहीं देखी,
पलक खोली ही थी अन्तिम नजारा आ गया मेरा।

कि उसकी झील सी आंखों में मैं न डूब पाऊंगा,
पहुंचकर बीच से वापिस शिकारा आ गया मेरा।

परस्ती बुत की कर लूँगा, मैरी तकदीर में बुत है,
नदी जुम्बिश कि टकरा के इशारा आ गया मेरा।

मुझे वालिद बनाया और बचपन दे दिया मुझको,
मेरी औलाद से बचपन दुबारा आ गया मेरा।

जो है मझदार में हम उनको किनारा देंगें।
डूबकर डूबते तिनके को सहारा देंगें।

आंख से अन्धे को सुरमा न जुटा पाए अगर,
उनको लाठी की तरह बढ़के सहारा देंगें।

जिन्हें चलनी से दूध दुहना पड़ा जीवन भर,
उनकों बरतन के साथ गाय दुबारा देंगें।

गीले आटे का गरीबी के साथ रिश्ता है,
फिर सुदामा को हम महलों का नजारा देंगें।

वो दिन करीब है जब लोग बगैर टांगो के,
ग़मज़दा लोगों कों "कौशल" सा सितारा देंगें।

घवल पहने लिबास दिखती है।

झील कितनी उदास दिखती है।

राह मन्जिल पे मुझे पहुंचा के,
वे सहारा हताश दिखती है।

बदली चोटी पर पहुंच कर, कुछ खुश,
और कुछ कुछ निराश दिखती है।

मेरे चेहरे पे मौत को पढ़के,
जिन्दगी वद हवास दिखती है।

मुझे खुशियों के गांव पहुंचा के,
नहीं तू आस पास दिखती है।

कहीं अन्दर जमीन भरता है।
डर के तब ठहाका निकलता है।

रात ने आफताब निगला है,
तभी दिन, रात को निगलता है।

धुआंधुआं सा दिल रहा होगा,
मंुह से वह आग को उगलता है।

होश में होश नहीं रहता है,
नशा रहे वो शख्स चलता है।

दोस्त की आस्तीन में “कौशल”,
डसने वाले का पता चलता है।

बत्तियाॅं सब बुझ गई बाजार की।
अब खबर आ जायेगी सरकार की।

बादलों की तैरती परछाईंया,
जैसे धरती ने खुशी इजहार की।

चान्दनी पत्तों से रिस कर जमीं पर,
मोतियों से बिखरती है प्यार की।

याद कर कर के परेशां मत करो,
हिचकियाॅ रूकती नहीं सरकार की।

मैं हुआ जन्नत नशीं तब आये वो,
मौत थी वह हसरते दीदार की।

चढ़ते सूरज की सवारी मेरे सर पे आ गई।
हम सफर थी मेरी परछाई उसे भी खा गई।

आपके जुल्मों का करके तर्जुमा तारीफ में,
कर रहा था बयां कड़वाहट जुबां पर आ गई।

सहन करने के अलावा और कुछ वश में नहीं,
हादसों के बीच में इतनी अकल तो आ गई।

आ गया आगाज से अन्जाम की जानिब सफर,
जो चली तहरीर झबले से कफन पे आ गई।

इन्तजारे यार वस्ले मौत का बाइस बना,
इश्क की अन्जाम तक कौशल कहानी आ गई।

तोप के पीछे सियासत,सामने जनता खड़ी है।
मारने को वह अड़ी और खुदखुशी की ये अड़ी है।

मौत की जद में है जीवन जिसमें दम हो वो पकड़ ले,
भूख से मरने की या गोली से मरने की घड़ी है।

वहाॅं लोहा उगायेंगें जहाॅ गेहॅू उग रहे है,
हमकों सांसों की पड़ी है उनको लोहे की पड़ी है।

उनको क्या मालूम नस्लें खत्म होने को यहाॅ है,
एक इन्सा नस्ल खाता जाये ये बेढ्व घड़ी है।

चन्द सिक्कों के लिये लाशें मसानों में जगाती,
सियासत है ध्यान में और लाश जनता की पड़ी है।

ये सियासत है कि मोहरा भूत प्रेतों के करों का,
या कि है शमशान जिसको प्यास लाशों की पड़ी है।

न मन्दिर न गिरजाघर और न मस्जिद ने बांटा है।
टुकड़ों टुकड़ों में ईश्वर को इन्सां ही ने बांटा है।

तेरा तारा मेरा सूरज उसका चांद सितारा है,
चांद सितारों तक को हम धरती वालों ने बांटा है।

मेरा रंग सफेद,हरा तेरा और उसका केसरिया,
किये रोशनी तक के हिस्से और आपस में बांटा है।

मेरा शहर मदीना तेरा काशी उसका वैथलहम,
क्या धरती को इन हिस्सों में परम पिता ने बांटा है।

तेरा पूरब मेरा पश्चिम उसका उत्तर दक्षिण है,
“कौशल” उसकी दुनिया है हमने आपस में बांटा है।

नहीं वक्त को मोड़ सके।
और न जीना छोड़ सके।

गटा पार्चा से रिश्ते,
टूटे तो न जोड़ सके।

◌े

तार तार छोटी चादर,
नहीं बिछी न ओड़ सके।

तारे अपने दामन में,
नहीं गिरे न तोड़ सके।

किस्मत क्या थी पत्थर थी,
न सरकी न तोड़ सके।

इस बस्ती में मीनारों को शीश झुकाना रस्म है।
हत्या करना फिर मजार चादर ले जाना रस्म है।

मैनें उसकी जान बचाई उसने कहा शुक्रिया, तो,

मुझकों ऐसा लगा यहां केवल शुकराना रस्म है।

एक नजर में कभी मोहब्बत हो जाती थी सुनते है,
अब तो केवल नजर फेरना, नजर चुराना रस्म है।

दौरे हाजिर कपड़े ही तय करते है सब रिश्तों को,
इंसानी जज्बों पर बाकी बातें करना रस्म है।

पहले इन्कलाब के जज्बें दिल से निकला करते थे,
अखबारों में "कौशल" उन बातों का छपना रस्म है।

शब्द ही जिन्दगी में ढ़लता है।
शब्द काटो तो खंू निकलता है।
शब्द जब भी चबाये जाते है,
सुनने वालों का दिल दहलता है।
कुछ इशारे भी शब्द होते है,
छोड़ने वाला हाथ मलता है।
शब्द चुप हो विचार होता हैं,

व्यक्त हों ध्वनि में बदलता है।
क्रान्ति की जब मशाल जलती है,
शब्द ही भीड़ में मचलता है।
युद्ध के शब्द ही लड़ाकू हैं,
क्षमा में शब्द ही पिघलता है।
शब्द भण्डार एक मैं एक तू ,
मिलें तो नया कोष बनता है।
मृत्यु पर शब्द खत्म होते है,
शब्द अन्तिम चिता में जलता है।
शब्द के तीर तो सुने होंगे,
लौट कर तोप में बदलता है।
शब्द मत आसमान पर थूकों,
गिरा तो मुुंह पे ही टपकता है।
शब्द के हार जब चढ़ाते हो,
ढेर फूलों का तुम्हें मिलता है।
शब्द बाहर हंै अर्थ अन्दर है,
जिससे वेद और कुरान बनता है।
शब्द है व्रहन शब्द है माया,
जगत इस जाल में उलझता है।
शब्द ही है अनन्त रूपों में,
शब्द से शब्द ही संभलता है।

बेशक बुलन्द हो मगर थोड़ी झुकी रहे।

ऊपर की बुर्ज नींव को भी देखती रहे।

बागड़ से खैर जानवर तो दूर रहेगे,
बागड़ से खुदा खैर, कि कोंपल बची रहे।

बचपन की याद झोपड़ी में ले गई हमें,
अपने बनाए महल में हम कल नहीं रहे।

ईमान बचानें के लिए खुदकुशी कैसी,
इतना ही बहुत है कि जुबां तल्ख सी रहे।

पत्तियाॅं और कोपलें झूमें बहुत "कौशल",
जड़ उनकी बहतरी को जमीं सें जुड़ी रहे।

गांव सा भोला बदन है।
मन खुला जैसे गगन है।

वस्त्र अन्दर के बगीचे,
तू सुगन्धित एक चमन है।

रंग बदलती साड़ियां है,
ये जो ऋतुओं का भ्रमण है।

पक्षियों का मधुर ध्वनि में,
तू चहकता सा गगन है।

झनकती पाजेब है या,
वृक्ष से झरता पवन है।

घन्टियाॅ गोधूलियों की,
चूड़ियों की खनन खन है।

श्वेत धन से तैरता सा,
श्वेत पर्णी सुघड़ तन है,

जब से कटने लगे तरू वर।
पक्षियों के कम हुये स्वर।

उदासी है अटारी में,
चले बच्चें गांव तज कर।

मशीनों के आगमन से,
जानवर हो चले बेघर।

हवा बदली अन्धड़ों में,
परिन्दों के जब कटे घर।

खफा होने लगा सूरज,
हो गये निर्झर।

दुकानों के आक्रमण से◌े,
छुप गये जाने कहा◌ॅ घर।

हाथों में नेजे भीड़ के जिस सिम्त हो गये।
मुद्दे बहस के टूटकर हरसू बिखर गए।

होते थे तब मुशायरे सुनते थे बाअदब,
दौरे अदीव आजकल जाने किधर गए।

दी आपने जो दाद बुजुर्गो का करम है,
अलफाज मं◌ुह से निकले न थे और निखर गए।

शिरकत मुशायरे में और बख्शीश पर बहस,
अच्छा हुआ के मीर और गालिब गुजर गए।

साईन्स की ईजाद है महफिल ए हाजरीन,
तस्वीर कौशल खिच रही थी आ इधर गए।

मेरी गजल ही बहुत है श्रीमान एक तरफ।
रख दीजिये फिर जहां के दीवान एक तरफ।

मुड़ने का इन्तजार है चाकू छुपे हुये,
सब मिल के हो गये है मेहरबान एक तरफ।

दुनिया तेरे लबों के जुम्बिश की वजह से है,
तू एक तरफ है जहां का ईमान एक तरफ।

कन्धों पे बोझ तुम्हारा आंखों में तितलियां,
है भूख एक तरफ मेरे अरमान एक तरफ।

एक खेलता बच्चा है बुजुर्गो के बीच में,

आगाज एक तरफ है और अन्जाम एक तरफ।

बैचेन कर दिया है मुझे तेरी नजर ने,
कलियों से उठा देखिये तूफान एक तरफ।

मिसरा था मेरा आपने जिस पर गजल लिखी,
महफिल में पढ़ के रख दिया अहसान एक तरफ।

धरती पे झुका है गगन कोहरे के रूप में,
सूरज चुराये चांद की पहचान एक तरफ।

घने सन्नाटे में एक मुद्दा उछलना चाहिये।
मुतमईन सैलाब में हलचल मचलना चाहिये।

चाकुओं को जमाने के मुखातिब कर दीजिये,
चाकुओं से खुदखुशी आगे न होना चाहियेै।

वजन जूतों का मुसलसल रात दिन बढ़ता रहा,
सब्र की हद हो चुकी चीखें निकलना चाहिये।

कद बहुत छोटा मगर ख्वाहिश की हद तो देखिये,
उनकी परछाई से पूरी बज़्म ढकना चाहिये।

है महावत से गुजारिश जरा सी कौशल की ये,
बौखलाए हाथियों की मद उतरना चाहिये।

सिंहासन से हिली गजल।
कल जुलूस में मिली गजल।

गुमी याद के जंगल में,
टुकड़ा टुकड़ा मिली गजल।

पैरोकार गरीबों की,
जगह जगह से सिली गजल।

घिसते घिसते ही होगी,
चमकदार झिलमिली गजल।

उहा पोह से जब निकली,
दिखी फूल सी खिली गजल।

हमने बीचों बीच महफिल के उसे जो रख दिया।
देखना है किसको कितनी रास आता है दिया।

रातभर कैसे जलेगा आज के हालात में ?
आजकल तो शाम से ही थरथराता है दिया।

खाक करती है फसल को महल की चिनगारियाँ,
जद में आता है हमेशा झोपड़ी का ही दिया।

है बहुत आसान जलना एक पतंगे की तरह,
रफ्ता रफ्ता रातभर जलकर दिखाता है दिया।

डर सताता है उसे बुझने का थमने पर हवा,
हो अगर तूफान "कौशल" नाचता है ये दिया।

मैं देहरी पर खड़ा हूॅ एक आंसू पलक पर जैसे।
हों गिरने के लिये बैचेन बादल फलक पर जैसे।

वे बहने भी नहीं देते है आंसू पोछ देते हैं,
मुहिम हो हटाने की अतिकमण एक सड़क पर जैसे।

तुम्हें खूबसूरती एक चीज लगती बेचने की है,
हो कब्जा वांगवां का गुलिस्ता की महक पर जैसे।

ये झरना खूबसूरत,फूल सुन्दर वादियां सुन्दर,
निकलती वहि,सुमधुर पायलों की झनक पर जैसे।

वदन सुन्दर हिरण को घेर कर चलते शिकारी है,
लगी हो आॅख वाजों की लवा की चहक पर जैसे।

जिससे महफिल में नजरें चुराता रहा।
दिल के अन्दर उसी को सजाता रहा।

मैं जो सोचूं तो वह जो न सोचूं तो वह,
उसको खोता रहा उसको पाता रहा।

वह जो बोला तो गीतों के झरने बहे,
जिनको पीके जहां गुनगुनाता रहा।

वक्त आया और कोेने में खुद बैठकर,
उसकी तालों पे तबला बजाता रहा।

डोरियां उंगलियों में थिरकती रही,
मस्त "कौशल" को प्रियतम नचाता रहा।

रूप तुम्हारा इस प्रकार उत्कंठित करने वाला है।
मानों हिमगिरि के पीछे से चन्द्र निकलने वाला है।

मुझसे तुम क्रीड़ा करते हो, मैं चन्चल हो जाता हंूॅ,
एक शिला मैं मूर्तिमन्त तू सांसें भरने वाला है।

खाली आंचल आसमान का टांका चांद सितारों से,
शून्य लगा कर तू अनन्त तक गिनती करने वाला है।

रंगमंच की क्रीडा तूने पहले से ही लिख दी है,
मन्चन के पहले तू उसको नहीं बताने वाला है।

हस्ती जब कद से लड़ती है तब तुम तक आ जाता हूॅ,
यू तो घर के बाजू में ही मन्दिर है मधुशाला है।

उनकी ख्वाहिश को सुन लिया जाए।
न हां किया न न किया जाए।

बात मकसद पे आने वाली है,
रूख अचानक बदल दिया जाए।

सियासत चाहती है बेगारी,
इबादत है समझ के की जाए।

बकौल उनके वे फरिश्ते है,

हर्ज क्या मान भी लिया जाए।

खुदा शैतान बारहा उलझें,
मोहरा "कौशल" न बनाया जाए।

सितारे चांद तारे तितलियों से खूबसूरत तू।
है हद्दे सोच के उस पार से भी खूबसूरत तू।

सितारों से टंका सलवार कुरता चांद सा चेहरा,
धरती पर अगरचे है फलक से खूबसूरत तू।

जिसे कहते है सुन्दरता तेरी परछाई लगती है,
है लफ्जों से बन्धी खूबसूरती से खूब सूरत तू।

मेरे अन्दर समन्दर तू मैं जिसमें डूब जाता हूॅ,
है डूबे चन्द्रमा के अक्स से भी खूबसूरत तू।

मैं पीना चाहता हूॅ अक्स तेरा झील सा बनकर,
तेरा मन खूबसूरत, मन बदन से खूबसूरत तू।

समन्दर रूप है तेरा, तू फलों का समन्दर है,
है बिखरी चान्दनी के नूर से भी खूबसूरत तू।

इस समुद्र की शार्क मछलियाॅं।
तय करती मिल जाएंगी।
किसके हिस्से कितनी कितनी,
सोन मछरियाॅ आएंगी।
उनकी जड़े जमीं पर काबिज,
आसमान तक पत्ते है।
उनके नीचे नए पौघ की,
जड़े नहीं जम पाएंगी।
कुर्सी पर है यहांे केंचुए,
गैरत का क्या काम यहांॅ।
कदमों में झुकने वालों को,
बख्शीशें दी जाएंगी।
तूफानों से बचना हो तो,
झुकी हुई गरदन रखना।

तनी हुई गरदन पर एकदम,
तलवारें चल जाएंगी।
देख सियारों ने पाली है,
भेड़े रिश्वत में देने।
यहां भेड़ियों के हमले में,
"कौशल" वे दी जाएंगी।

करीबी में अलग होने को बैचेनी मचलती है,
हम सफर साथ हो तो साथ एक दूरी भी चलती है।

शमा जलने पे नाहक जलने आ जाते हो परवनों,
ए परवानों, शमा तनहाई में जलने को जलती है।

नहीं मुश्किल है कुछ भी उजाले में सम्हल कर चलना,
वही इन्सानियत है जो अन्धेरे में सम्हलती है।

नहीं तू एक ही जज्बे में कर बरबाद जीवन को,
कुदरत तो हरेक मौसम में अपने रंग बदलती है।

भला कर भलाई का भी जरा अहसास करवा दे,

ये बदली बरसने के पेश्तर कितनी गजरती है।

जहां सिर अदब से झुकाया है।
पीठ पर एक घाव पाया है।

ढल चुके सभी घर दुकानों में,
और तू खाली जेब आया है।

डर है मजबूत घर बिखरने का,
बाद मुद्दत अनाज आया है।

रश्क आया बहुत रकीबों पर,
जब अजीजों को आजमाया है।

कोई त्यौहार आ गया "कौशल"
शहर में फौजियों का साया है।

हर दिन आते जाते हो।
कितना कम मिल पाते हो।

मैं तो शर्माता ही हूँ।
तुम भी तो शर्माते हो।

जब तुम बातें करते हो,
लगता है कि गाते हो।

आंखों से ओझल होकर,
तुम दिल में आ जाते हो।

मेरा रास्ता तुम तक है,
क्यों मुझको बहाकते हो।

जगह जगह से टूटा दिल,
पत्थर बन टकराते हो।

मैं परोसा जाऊंगा चख लीजिएगा।
आपका हिस्सा गरम खा लीजिएगा।

खण्डहर गीली हवाओं का बसेरा,
वार्निश बाहर कहां तक कीजिएगा।

भेड़िये मांदों के बाहर आएंगे ही,
जिस्म को ढ़ंक करके निकला कीजिएगा।

पेट के आगे कहां का सिर उठाना,
फलसफा मजमों में झाड़ा कीजिएगा।

दुआओं ने भी असर अब खो दिया है,
कुछ न कौशल से गुजारिश कीजिएगा।

जो ऊपर लोग है वैशाखियों पर ही खड़े देखे।

कि जिनकी नीव हिलती है, महल उनके बड़े देखे।

गलती आस्मां की हो सजा धरती को मिलती है,
जो है आस्मां पर हमने गलती पर अड़े देखे।

हुये आदम से लेकर आज तक सुल्तान जितने भी,
तन मिट्टी में किस्से वक्त में उनके गढ़े देखे।

हमारा रंग धरती सा, पसीना मोतियों सा है,
जो मोती बरसते है, उनको मुकुटों में जड़े देखें।

समन्दर जात आदम की लहर ऊपर ही आती है,
हुये विस्फोट अन्दर तटों पर टुकड़ें पड़े देखे।

पार करते दलदलों को जिन्दगी ढल जाएगी।
दलदलों के रास्ते मंजिल नहीं मिल पाएगी।

सड़ गया है इतना पानी कि, कमल खिलते नही,
अब तो शक है कि कभी काई यहां खिल पाएगी।

कोयले की दलाली में हाथ की तो बात क्या,
पीढ़ियों तक बदन की कालिख नहीं घुल पाएगी।

चाकुओं और इश्तहारों में नही है फर्क अब,
सांत्वना भी छीनकर कुछ पास ये ले जाएगी।

गुफ्तगू को है जरूरी आज पैसे की जुबां,
जुबां कुदरत की यहां "कौशल" नहीं चल पाएगी।

उन्हीं के खेल है होंगें सही कदम उनके।
उन्हीें के रेफ्री है और है नियम उनके।

जहां पैसों की नदी जेब से निकलती हो,
वही उदगम के कहीं पास है सनम उनके।

उनके नीचे न गिरें बख्शिये इज्जत न उन्हें,
उन्हें भी देखा है और देखे है करम उनके।

वकौल उनके उनसे आफताब रोशन है,
बहस उनसे न करें रहनें दे भरम उनके।

उन्हें श्रीनगर की सर्दी में गर्मी तेज लगती है,
बहुत है गमजदा गम होंगें नहीं कम उनके।

पास रहकर जो जुदा रहता है।
डर मुझे उससे सदा रहता है।

सामने चुप है, तनहा होते ही,
कुछ न कुछ बुदबुदाता रहता है।

जगह पहलू में मुझे दे के वह,
आंख से आग भी उगलता है।

अलग होके मैं कसमसाता हूॅ,
और वह गुनगुनाता रहता है।

जिक्र करता है हंस के "कौशल" का,
मगर हरकत से खफा लगता है।

जिन्दगी खुद ही इन्तजारे आखिरत का नाम है।
गुजरते वक्त का ठहराव न कोई मुकाम है।

जला देता है सभी को बदल देता है सभी को,
अनगिनत खंडहर कब्रों पे लिखा उसका नाम है।

जवानी भाग फन्दे से कहां तक बच के जायेगी,
ये धरती चांद तारे आस्मां भी उसका जाम है।

ये जलती आग है बुझती नही है कुछ भी खाने से,
निगलना वक्त भी इस वक्त का छोटा सा काम है।

कहां खो गये सीड़ी आस्मां तक बनाने वाले,
कहां मूसा कहां फिरओन की अब सुबह हो शाम है।

गुजरते वक्त का हम जहां में अहसास करते हैं,
ये शै है या नहीं या किसी शै का कोई नाम है।

मौत कुछ जिन्दगी से बेहतर थी।
इसलिये उसने खुदखुशी की थी।

तुम्हारी रोशनी की ख्वाहिश ने।
तन की चिन्गारी को हवा दी थी।

कहा तुमने कि रहो पिजरे में।
उसने रूख पे नकाब ढकली थी।

मुसलसल बोझ के तले सांसे,
या खुदा क्या वो◌े जिन्दगी ही थी।

एक तकल्लुफ था मुस्कुराना भी,
नहीं "कौशल" की कोई ख्वाहिश थी।

ये न सोचों कि हम पिटते जायेंगें।
पिटने पर कम से कम शोर मचायेंगें।

भले रात ने हमकों दुनिया से छीना,
दिन को हम रातों के जुल्म बतायेंगे।

दिन को रात निगल कर उगला करती है,
दिन तक में हम शमा जलाते जायेंगें।

बेईमान हो गये सुबह मत यकीं करो,
दौरे हाजिर वे रातों को लायेंगे।

जीत हो गई तारीखों में दफन कहीं,
हम लड़ते जायेंगें मरते जायेंगे।

वक्त बादलों की छिन पल बरसात सखी।
बंूदों जैसे गिरती है दिन रात सखी।

उठती गिरती लहरें बच्चे बूढ़े है,
कोई समन्दर है आदम की जात सखी।

पूनम के चन्दा सा दिलबर आता है,
लहरों से दिल में उठते जजबात सखी।

पूरब से पश्चिम तक तपती रेत बिछी,
सुनते है कुछ होती है बरसात सखी।

तुझे देखने तक के पैसे लगते है,
नहीं हमारी छूने की औकात सखी।

उजड़ी दुनिया टूटा दिल है हाथों में,
तू ही बतला क्या लाऊं सौगात सखी।

धरा पर मेघ की परछाई हंसों सी दिखार्द दे।
कल कल हवा की पीपल से निर्झर सी सुनाई दे।

तेरी आवाज में एक साथ बजती है कई घन्टी,
तू सम्बोधित करें मुझको तो कोयल सी सुनाई दे।

तेरी यादें नशे में मुझको नहला देतीं है इतना,
तेरी एक नजर लगता है मुझे पूरी सुराही दे।

तेरा अस्तित्व मुझमें एक दिनकर सा चमकता है,
तेरे अवसाद में दुनिया अन्धेरी सी दिखाई दे।

तेरी दन्तावली से हो रही दुनिया प्रकाशित सी,
हरी साड़ी में तू डाली चमेली की दिखाई दे।

तेरी शक्ति मेरी शक्ति तेरे कारण मैं सुनता हूॅ,
अगर तू छोड़ दे मुझको न देखूं न सुनाई दे।

जाल तो मजबूत हैं मत उसका अन्दाजा लगा।
फड़फडाने से मेरी ताकत का अन्दाजा लगा।

गर जमीं तेरी न हो तो फेंक दें या जला दे,
दूसरे के बगीचे में अपना मत रोपा लगा।

चाशनी लिपटी बदन में और चीटों का शहर,
बेजुबां के दर्द का अब खुद की अन्दाजा लगा।

मैं परेशां हूॅ मगर कितना तू इसको छोड़ दे,
सिर चटक जाएगा तेरा तू न अन्दाजा लगा।

इस शहर ने कर दिया कौशल का चेहरा बदशकल,
हवा में तेजाब कितना है तू अन्दाजा लगा।

नहीं छोड़ती है जो उसको पल भर को।
परछाई कुछ चिपक गई जीवन भर को।

उसे हांकता रहा एक पल जीवन भर,
नहीं खुशी उसने घुसने दी तिल भर की।

एक पल बैठा जीवन के सिंहासन पर,
रहा तरसता पल आजीवन एक दर को।

नहीं उसे मालूम नींद कब आई थी,
काश उसे फुरसत मिल जाती दम भर को।

किये बहुत उद्घाटन उसने महलों के,
रहा भटकता वह घर के आंगन भर को।

सदायें किसी की इस घर में बिल्कुल नहीं आती हैं।
हवायें ही फकत आकर किवाड़ों को हिलाती हैं।

यहां ठण्डी हवायें आती है हमकों नहीं छूतीं,
पहाड़ों से निकल कर पहाड़ों पर चली जाती है।

मुझे दुनिया से करके अलग मुझकों छोड़ देती है,
बहारें इस तरह से जिन्दगी में मेरे आती हैं।

लगा मैं डूबने नावें बहुत सी अश्क पा होकर,
बचाती तो नहीं गहराई अलबत्ता बढ़ाती हैं।

लिये ईमान का मोती बजारों में बहुत घूमा,
नहीं इसकी कोई कीमत दुकाने ये बताती हैं।

उन्हीं से बेवफाई सीख ली है उनकी यादों नें,
अन्धेरों में धका करके अकेला छोड़ जाती है।

मन जब छू ले खबर।
तब लगती है खबर।

भूखे भूखों मरें,
इसमें क्या है खबर।

बगुलों का कीर्तन,
अब बनती है खबर।

मैं बदनाम बहुत,
ये है उनकी खबर।

इश्तहार खबरें,
इश्तहार है खबर।

खबर एक दहशत,
दहशत एक खबर।

मुझसे जग बाखबर,
वो मुझसे बेखबर।

शख्श हर एक अकेला कारवां है।
नहीं सो पाता क्योंकि बागवां है।

देख कर मुझकों चड़ जाती है भोंहें,
मुझ पे महबूब बेहद मेहरबां है।

खबर दुनिया की तुम देते किसे हो,
अभी तो वह जवां मौसम जवां है।

सफर मीलों का कैसे कर लिया तय,
है खन्जर सब तरफ एक गिरेबां है।

नहीं टिकतीं निगाहें रूख पे तेरे,
गुलाबी रूख है कि जलता अंबा है।

रखा है दिल में बचाकर बिरासत को आज तक।
रोशनी की बात कुनबा कर रहा है आज तक।

एक अरसा हो गया है आखिरी खत को मिले,
क्या पता होगी न होगी खैरियत भी आज तक।

आपने झिड़का था उसको एक अरसा हो गया,
कांपता है शख्स वह कुछ खड़कने पर आज तक।

रौंद डाला भीड़ ने मंजिल का उसका रास्ता,
पूछता है खुद की गलती वह मुसाफिर आज तक।

था उड़ाया आशियां कौशल का तूफां ने कभी,
ढूंढता है आसमां के तले छत को आज तक।

हमें अब देखना है कौन थकता है जमाने में।
कहीं तुम धोखा देने में कहीं हम धोखा खाने में

जगह बदली कि तुम बदले करें किससे शिकायत हम,
बदल जाते है मतलब ल¬फ्ज के भी तर्जुमाने में।

अदब की बात उनसे कपड़े जिनकों बोझ लगते हैं,
बफाई की तमन्ना जिस्म से मत कर जमाने में।

तुम्हे मेरी वफाई से शिकायत लगी रहती है,
बेवफा बन के तुमको हर्ज क्या है आजमाने में।

इबादत के लिये बुत हंू मैं नफरत के लिये पत्थर,
कहीं ठोकर न खा लेना मुझे तुम आजमाने में।

कभी थे पेड़ ये खिड़की ये सोफा और दरवाजे,
लगा था जिनको एक अरसा जड़े अपनी जमाने में।

निर्णय दिया अदालत ने वो इस निश्चय पर आई है।

सच अगर बोलता है तो उसने सच से रिश्वत खाई है।

जीवन है एक बेटी जैसा, उसे पालना नाजों से,

चली जायेगी एक दम जैसे अपनी नहीं पराई है।

कठपुतली का एक हुजूम सड़को पर आ निकला देखो,
बचा रहेगा प्रजातन्त्र, अब सांस सांस में आई है।

घर से सड़कों पर आने की तुम थोड़ी हिम्मत रखना,
इतनी सी ही हिम्मत अब तक जहां बचा कर लाई है।

आने के पहले जाने की तय करती है वह राहें,
दौलत बीवी नहीं कोई, वह तो जाहिर हरजाई है।

कारण दिखते नहीं कभी दिखती है केवल धटनायें,
कुदरत निर्णय देती है, वह देती नहीं सफाई है।

खूनी बारिश ऊपर से तो दोष नही है बारिश का,
उड़ी गगन पर जो वह बूंदे बन कर आई है।

छीना है वह भी कब तक तू पास यहां रख पायेगा,
खाने खाना खाता है कहते है रोटी खाई है।

हवा हवा की सांसे है खाना खाने को खाता है,
पानी को पीता पानी और मौत मौत को आई है।

छत छत के हालात।

दिखा गई बरसात।

खुदकुशियों की बाढ़,
शासन की सौगात।

मुझको पिटवा दिया,
भड़का के जज्बात।

कुछ अच्छी भी लगे,
सच्ची सच्ची बात।

बाजू तैं बैठूं,
क्या मेरी औकात।

दशहते दिल जगाने लगा है शहर।
जंगलों में धकाने लगा है शहर।

चूनरी उड़ गई, दिल मचलने लगा,

गांव में आने जाने लगा है शहर।

धुल के परछाइयां बह के जाने लगी,
रोशनी में नहाने लगा है शहर।

भाई पर भाई शंकायें करने लगा,
पांव दिल में जमाने लगा है शहर।

झुण्ड की झुण्ड झोपड़ियां ऊंचे महल,
भार से चरमराने लगा है शहर।

बिलबिलाती हुई भीड़ और गाड़ियां,
चलने में लड़खड़ाने लगा है शहर

खून गुर्दे जिगर तक लगा बेचने,
कैसे पैसे कमाने लगा है शहर।

खून से लाश लथपथ पड़ी देखकर,
मर्सिया मस्त गाने लगा है शहर।

जिके रकीबां खतों में आया बदन जलने लगा।
एक शोला जोगिरा सारा चमन जलने लगा।

दूरीयां आ ही गई लम्बे सफर में हमसफर,
जो सहारा था सफर में अब वजन लगने लगा।

और भी कोई नजर में आ गया है आपको,
आपकी कुछ बेरूखी से जाने मन लगने लगा।

जिन्दगी को ब्याज की मानिन्द पंजों में किया,
हंस के फिर पहले मिलन को मूलधन कहने लगा।

तय हदें कर दी बसाहट की यहां भी आपने,
मुझको अब मेरा शहर मेरा बतन लगने लगा।

इस घर के मालिक होकर।
हम है नौकर के नौकर।

अच्छे दिखने की खातिर,
फटीं कमीजें धो धो कर।

बार बार मैं सम्हलूगां,

बार बार खाकर ठोकर।

जागंू तो खो देता हूँ,
सब मिल जाता है सोकर।

घर में कांटे उग आये,
सिला मिला ये गुल बोकर।

जालिम के आगे भइय्या,
नहीं मिलेगा कुछ रोकर।

खुद वजूद खो बैठेगा,
आसमान धरती खोकर।

फाइल कागज नहीं तुम्हारे देखेंगें,
छुट्‌टी ले ली गांव हमारे देखेंगें।

अपनी छत से धुआं धुआं सा दिखता है,
शहर छोड़ कर चांद सितारे देखेंगें।

बापू भैय्या, काका काकी भाई बहिन,
गांव गये तो रिश्ते सारे देखेंगे।

नीलकण्ठ, खरगोश, लोमड़ी, मोर, हिरण,
जंगल जाकर खूब नजारे देखेंगे।

खो-खो, कंचे और कबड्डी, लुका छिपी,
ढ़ोर चराना, नदी किनारे देखेंगे।

रोटी एक अमानत है और भूख जिस्म में रहती है।
कोई तो बतलाए मनु की स्मृति अब क्या कहती है।

पोर पोर में दर्द सुबह से दिन भर सीढ़ी चढ़ना है,
रात बेरहम है ऊपर की मंजिल पर ही रहती है।

महफिल में आने का मकसद जाने क्या था भूल गया,
अब तो वह करना पड़ता है जो ये महफिल कहती है।

लम्बा जीवन हो बिसात का दुआ मांगता है मोहरा,
मोहरे की तो जान उंगलियों और बिसात पर रहती है।

उस पंजर में अमाशय से बड़ी आंत तक कुछ न था,
कौशल सरकारी रिपोर्ट तो दिल का दौरा कहती है।

जर्रे सितारे बन तो गये घर को छोड़ कर।
तकदीर से डरते है गिरादे न तोड़ कर।

जज्बात सारे जम गये ऊँचाई पे जाके,
पानी की धार निकालों पत्थर से फोड़ कर।

है मोतियों के ढ़ेर या लूटे हुये आंसू,
सैलाब इनका रख नहीं पाओगे जोड़ कर ।

माशूक की खुदखुशी की परचे में खबर है,
जो जेब में खत रख लिया है हंस के मोड़ कर।

मन का भी श्याम जब भी मिलेगा तो करेगा,
बातें मरोड़ कर और कलाई मरोड़ कर।

बातों में हार जाऊंगा न कर मुकाबला,
करना मुकाबला है तो फिर कामों में होड़ कर।

दौलत न खर्च की तो गणित तेज करोगे,
करते रहोगे गुणा या जमाओगे जोड़ कर।

आपने जब से उसे घर की विरासत दी है।
उसने मीनार गिराने की पहल कर दी है।

हमकों तो बाद गुज़रने के याद कर लेना,
हमनें घर फूूंक के राहों को रोशनी दी है।

अभी से दूसरी बाजी का ख्याल न लाएं,
एक ही चाल हुई है और एक शह दी है।

कहा है मुखिया बराबर से ख्याल रखता है,
इसलिये आपने अपनों को चाशनी दी है।

आपसे उनकी शिकायत न करेगा "कौशल",
उसने मयखाने में भी आपको संगत दी है।

घर से निकले चलते चलते रात आ गई।
एक नये घर की जरूरत फिर से आ गई।

साथ क्योंकर हो गये हमलावरों के हम,
भीड़ जब हमलावरों की घर पे आ गई।

घर में हरियाली की जगह नागफनी है,
और मैं चितिंत हूँ तितली कैसे आ गई।

बच गये शम्मा से अगर, छिपकली भी है,
मौत हर कोने से परवाने भी आ गई।

ऊपरी मन्जिल में है लाशें सजी हुई,
झोपड़ी में जिन्दगी घबरा के आ गई।

कोशिशे मत कीजिये उसको जगाने के लिये।
वह उठेगा तो उठेगा आत्महत्या के लिये।

घर के बाहर जायेगा तो कहां तक जा पाएगा,
फलक भी बैठा हुआ है घर की दीवारें लिये।

देर तक उसको मकां अन्दर नहीं रख पाएगा,
उसमें है वजहें कई बाहर निकलने के लिये।

चाहकर भी पेटभर खाना नहीं दे पाएगी,
अधमरी कौमे जरूरी है सियासत के लिये।

हो चुके कौशल के सारे काम पूरे जिन्दगी,
खुदखुशी ही बस बची है कर गुजरने के लिये।

चुप रहता हूॅ फिर भी आकर लड़ते है।
मेरे अन्दर कितने लोग झगड़ते हैं।

परचा कितना भी अच्छा करके आऊं,
न जाने क्यों एक दो प्रश्न बिगड़ते हैं।

सभी मुकम्मल हो कुछ भाग खटकता है,
चलूॅ गलीचे पर कुछ कंकड़ गड़ते हैं।

जब खुशियों का मुझे समन्दर मिलता है,
गम की कुछ बंूदों के अश्क घुमड़ते हैं।

एसी जन्नत जिसमें मिला जहन्नुम हो,
देखंूगा रब मुझे किस तरह गढ़ते हैं ।

पुरानी बस्तियों के लोग ये हर बार कहते है।
जहां पहरा हो रोटी पर उसे सरकार कहते है।

शहर में घूमना तो उस जगह से दूर ही रहना,
सौदागर जिसे कुछ फख्र से बाजार कहते है।

तुझे जो लूटता है जानते है लोग सब उसको,
मगर वे चुप रहेंगे वे उसे सरदार कहते है।

तिजोरी में यहां राजा के है कुछ टैक्स लगने को,
न फैला हाथ सूफी तुझसे बारम्बार कहते है।

हमारी चोट खाई अस्मतों ने ताज बदले है,
उन्हें समझाये कोई हम तो ये हर बार कहते है।

हो जवाब में प्रश्न और कुछ प्रश्न जवाबी हो।

धूप गुनगुनी हो साथ में ठण्ड गुलाबी हो।

जन्नत और तहन्नुम उसको साथ साथ देना,
कभी कभी परहेज करे जो कभी शराबी हो।

नहीं तैरना आता हो तो कोई बात नहीं,
मगर तैरने की बावत कुछ ज्ञान किताबी हो।

पहले जाकर सही पता तस्दीक किया मैने,
फिर भेजे थे खत कि खुशखत कभी जवाबी हो।

तंग दिली से दौलत घर में आ तो जाती है,
ऐसा दिन आना मुश्किल जो जरा नवाबी हो।

नहीं खुदखुशी वाजिब है ईमान बचाने को
इतना काफी है जबान में जरा खराबी हो।

दुश्मनी चाकू से की तो दिल को खतरा हो गया।
झोपड़ी को बेदखल होने का खतरा हो गया।

गुलों की दीवार गुलशन तो बचा पाई नहीं,

खुरो ने रोंदा बगीचा चला हाथों से गया।

डर के कारण दोस्ती बारूद से हो तो गई,
घर धुएं में भर गया जेहन धुएं में भर गया।

आपकी दशहत से थर थर कांपकर चाकू खुला,
आप पर चलना था उल्टा फिर मुझी पर चल गया

ढेर पर लाशों के झण्डे सुलह के कौशल गडे,
आपके कपड़ों पे छींटा खून का जो आ गया।

पत्ता पत्ता प्यार जड़ों में नफरत है।
बहती नीचे अमन चैन के दहशत है।

डर कर आजादी को लोग मनाते है,
जिनके घर बारूद वहीं पे बरकत है।

तनहाई में घन्टों बातें करते हो,

महफिल में बेरूखी कौन सी हरकत है।

हमें लाजिमी है झुक जांये कदमों तक,
वे जुम्बिश दे दें उनकी ये जहमत है।

धीरे धीरे रिश्ते नाते छूट गये,
यादें हैं जेहन में रब की रहमत है।

दस्तक न दीजिये मेरी ड्योढी पे जरा देर।
मैं हूॅ मेरा महबूब और तनहाई जरा देर।

दम टूटने और दम में जरा सा है फासला,
मेरे ना खुदा पे फैसला ठहरा है जरा देर।

ना दीजिये आवाज मुझे आप जरा भी,
मैं देख रहा हूॅ मेरे सपनों को जरा देर।

आई थी मेरी मंजिल मुझे ढूंढते हुए,

न रूबरू हो पाई हकीकत से जरा देर।

माना तेरी जन्नत में है चश्में शहद भरे,
क्या प्यास बुझा पाएंगें "कौशल" की जरादेर।

हर हदों को पार कर।

सरहदों को पार कर।

सामने पहाड़ हों,
बैठ न तू हार कर।

रात हो अगर धनी,
दिन का इन्तजार कर।

ठोकरें गिरा जो दें,
बैठ न मन मार कर।

चल के मन्जिल आयेगी,

देख तू पुकार कर।

दुर्बलों का दोस्त बन,
दुश्मनों पर वार कर।

है कौन जो महफिल में असरदार नहीं है।
चलते बनो कोई भी गुनहगार नहीं है।

है प्यास अभी वक्त पे बरसेगी घटाएं,
मौसम को आदमी से सरोकार नहीं है।

उस्ताद है अन्जाम सिखाता है इश्क का,
दीवाना है जरूर पर बेकार नहीं है।

जहमत न कीजिए मुझे देने को दुआएं,
दिल से नहीं निकलती असरदार नहीं है।

लुटता तो सरेआम है राही बाजार में,
कौशल की गलत तोहमत कि सरकार नहीं है।

हजारों साल से सूरज पड़ा है रात के पीछे।
सितारों की न दौलत हों कहीं इस बात के पीछे।

अगर तुम मानती कहना फिसलने से तो बच जाती,
तुम्हें तो पेंच दिखते हैं मेरे जज्बात के पीछे।

चमकते हैं गरजते है भरी बरसात में बादल,
बिखरते हमने देखा है उन्हें बरसात के पीछे।

कि मोटर गाड़ियों के साथ बच्चों भागना न तुम,
टपकती है शहर की लार भी देहात के पीछे।

भला कोई तुम्हें क्यों मोतियों के हार यंू देगा,
कहीं गरदन न फंस जाये किसी सौगात के पीछे।

तरस खाते है महफिल में जो मेरी बदनसीबी पर,
उन्हीं की मेहरबानी है मेरे हालात के पीछे।

खुदा खैरात उनको दे मुझे खैरात वे देंगें,

ये दुनिया चल रही है इस तरह खैरात के पीछे।

नहीं मन्जिल मेरी कोई, मेरी मन्जिल मेरा रस्ता,
नहीं मैं चला जीवन भर किसी बारात के पीछे।

इस शहर की तरक्की का जिक्र जब भी आएगा
नजारा फाकाकशों की भीड़ का आ जाएगा।

आग तो लगनी ही थी रस्साकशी के खेल में,
देखना इल्जाम रस्सी पर लगाया जायेगा।

हो रही खुफिरा नजर की घोषणा अवाम से,
अब खुले आकाश में मजमा लगाया जायेगा।

आ गया है रिंग मास्टर फिर पिटके बाहर से कहीं,
पालतू पीठों पे फिर हन्टर चलाया जायेगा।

चमचमाते चाकुओं और मेमनों का झुण्ड है,
इतना सुन्दर शहर "कौशल" और कहां॑ मिल पाएगा।

सूरज खत पूरव का है।

जिस पर पता रात का है।

रात शिकायत करती है,

क्यों सूरज दिन भर का है।

झिल मिल तारे फुलझडियां,

खुशदिल बहुत रात का है।

तारे किरणें किरणें है,

चांद अक्स सूरज का है।

सूरज का मगरिव जाना,

स्याह वक्त मशरिक का है।

वहीं महलों में रह गई होगी।
नदी नहरों से मिल गई होगी।

पहाड़ों पर ही वह बरसता है,
भेंट बादल को दी गई होगी।

उन्हें मन्दिर ने बुत बना डाला,
वहां फरियाद न गई होगी।

है बहुत आज गमजदा काजी,
सच की पगड़ी उतर गई होगी।

मंत्र वेदो के मत पढ़ो "कौशल",
खंू बहाओं पहल तभी होगी।

महलों में भी रहकर वह अपने में गुमसुम रहता है।
ऐसा लगता है अन्दर की किसी गुफा में रहता है।

बाहर जा कर बतियाना अब नहीं मुकदद्र में आदम,
जरा सोचने तक में पत्थर लगने का डर रहता है।

लावा आग उगलने वाले ज्वालामुखी जहां भी है,
बुझे नहीं है उनमें अब भी धुआं निकलता रहता है।

नही इबादत गाह मित्र मन्दिर तो एक व्यवस्था है,
जिसमें नीचे से किशतों में जीवन खिंचता रहता है।

कर सकती हो तो नफरत की आग जरा कम कर देना,
कहते है "कौशल" का चेहरा झुलसा झुलसा रहता है।

बादल जैसी छाई उदासी।

घिर घिर कर फिर आई उदासी।
सुख है एक गगन का तारा,
है अपनी परछाई उदासी।
दिन दिन बढ़ती ही जाती है,
जैसे हो मंहगाई उदासी।
सूने दिल में बजती जैसे,
दूर कहीं शहनाई उदासी।
भरी दोपहर जैसे मई की,
दिल में लेकर आई उदासी।
सागर की लहरों सी खुशियाॅं,
सागर की गहराई उदासी।
शमा जली जब सूरज डूबा,
धुआं धुआं सी आई उदासी।
नींद खुली आधी रातों में,
नींद गई तो आई उदासी।
गलती से जब फिसल गया तो,
हंसी खोखली लाई उदासी।
मुझे छोड़ कर मत जाना तुम,
सुनती हो हरजाई उदासी।
आसमान की ऊॅंचाई है,
सागर की गहराई उदासी।
जिनकों घायल किया खुशी में,
उनकी है भरपाई उदासी।
बिछुडे जो जीवन साथी से,

कर देगी भरपाई उदासी।

ये तो माना अजीजों में करीबी भी चाहिये।
गुफ्तगू के वास्ते एक अजनबी भी चाहिये।

सियायत केवल अमीरों से कभी चलती नहीं,
गुलामी जो कर सके वह गरीबी भी चाहिये।

हैसियत वालों के गमगीं रूख को भी तो देखिये,
हैसियत पर पहुंचने बदनसीबी भी चाहिये।

मैने तुमको जो दिया था वो अलग से लिख लिया,
अलग जब हो ही गये खाता बही भी चाहिये।

जिन्दगी ने जो कुछ दिया है छांटता हूँ मैं उसे,
उसमें कुछ तो चाहिये है कुछ नहीं भी चाहिये।

घने अंधेरे में मशाल की चर्चा चली कहीं।
सदियों से ये चर्चा इससे आगे चली नहीं।

हांका लगा सियासत का ले हाथ कटोरा चल,
खैरातों की एक मुनादी तूने सुनी नहीं।

मंजिल का खाका दिल में था चलने के पहिले,
घेर लिया भटके लोंगो ने मंजिल मिली नहीं।

कुर्सी रही बदलती उनको कपड़ों के माफिक,
रहे बदलते कुर्सी वाले बदली कुर्सी नहीं।

क्या तारीख बदलने को तब्दीली कहते है,
"कौशल" की हालत में तो तब्दीली हुई नहीं।

जान मुर्दे में जगा दे वो गजल गाऊंगा।
कब्र से उनकों उठा दे वो गजल गाऊंगा।

बंूद को गरजते सागर में जो बदल डाले,

शख्श में कौम जगादे वो गजल गाऊंगा।

कौम झकझोर दंूगा नींद से झपकने पर,
क्रोध कायर में जगा दे वो गजल गाऊंगा।

गन्दगी को न जो चिपका के रखे चेहरे पर,
खुरच कर उसको हटा दे वो गजल गाऊंगा।

भेडिया बन के खून चूसते है इन्सा का,
उनको इन्सान बना दे वो गजल गाऊंगा।

खुले मंच से आजादी की तकरीरे करवाना है,
फिर पिजरों की एक तिजारत में उनको लग जाना है।

उनकी मुस्कानों के पीछे तलवारों की नोकें है,
हटने दो तलवारें चेहरे खौफनाक हो जाना है।

बन्दूको से तने हुए है इश्तहार बाजारों में,
जान हथेली पर लेकर ही बाजारों में जाना है।

फौलादी स्वर लगे चमकने गटापार्चा की माफिक,
गांव हो गए नई दिल्ली, कबिरा का गुमा ठिकाना है।

हर लमहा है एक शिकारी सांस परिन्दों को माफिक,
"कौशल" की किस्मत में या तो फंसना या मर जाना है।

पूरे चमन का जो नूरे नजर है ।
पतझड़ की उस पर शुरू से नजर है।

इन्साफ से कुछ भी न मांगो बेहतर,
झुका इन्साफ का कमजोर सर है।

जमाना तो है कातिल के हक में,
और निहत्था ही वो देखिये तो इधर है।

मुझको दुत्कारता है दूर से ही,
तयशुदा है कि ये मेरा ही घर है।

कैसे कानून उनको सजा देगा,
खुद ही वह कातिलों के रहम पर है।

धुर्य से घिर गया है आस्मां तक,
हमारा गांव लेकिन वे खबर है।

घर का वह फकत हिस्सा ही नहीं है
उसके अन्दर मुकम्मल एक घर है।

बन्द घर में सोचती है दिये की बाती।
छत न होती तो फलक तक रोशनी जाती।

चाहती तो है मुझे वे इन्तिहा मन्जिल,
है गुरूरे हद कि चल कर खुद नही आती।

कोशिशें पुरजोर नगमों में करें लेकिन,
वक्त से पहले खानी आ नहीं पाती।

है लड़ाई भी जरूरी अमन की खातिर,
नींव में हो तो इमारत बन नहीं पाती।

सीढ़ियां नाकामियां है कामयाबी की,
बगैर नुक्तों के इबारत बन नही पाती।

पिलाये रफ्ता रफ्ता जाम कुछ जहर भर कर।
गिरेबां चाक कर डाला शरीक सफर बन कर।

कभी वालिद कभी काजी कभी उस्ताद जैसी,
सियासत ने हमें झिड़का बदलते रूप घर कर।

नहीं मुश्किल मारना या खुदखुशी करना,
कोई बतलाये मरने मारने के बीच रह कर।

पके फल का बगीचा हं◌ॅ◌ू मैं कच्ची झोपड़ी हूॅ,
सन्नाते है रिश्तेदार मुझ पर संग हूॅ बनकर।

वो मन्जर फिर खड़ा हो जायेगा जो गुम गया है,
किसी हालत में लेकिन जिक्र उसका खत्म मत कर।

बस्ती में ऐसा भी एक मन चला है।
जो बस्ती की कीमत लगाने चला है।

नफरत छिपाता है वह मुझसे हंस के,
नकाबों से चेहरा छिपाने चला है।

मंडराते गिद्धों की परछाइयों में,
लवा वे खबर गुनगुनाने चला है।

उठाता है सिर उसके अन्दर फिर चाबुक,
दुबारा मुझे वह मनाने चला है।

देखों फकत चन्द सिक्कों की खातिर,
इन्सा खुदा को बनाने चला है।

रहते खुश वे लोग बड़े ।
जो बिल्कुल भी नहीं पड़े।

हैं खजूर से आश्वासन,
भुट्टों जैसे लोग खड़े।

सरे आम पिटना ही था,
नाहक सच पर आप अंडे।

वह तो हम जैसा निकला,
उतरे जब उसके कपड़े।

मैनें जब धन्धा पूछा,
उनके चाकू निकल पड़े।

क्या आजादी है कौशल,
गली गली में है झगड़े।

रह न तू पत्थर होकर।
तुझको ही देगा ठोकर।

नहीं पसीजी ये किस्मत,
उमर बिताई रो रोकर।

एक इश्क की दौलत को,
पाया है सब कुछ खोकर।

छीनोगे कुछ न दूंगा,
दे दंूगा सब खुश होकर।

हाथ नहीं तिनका आया,
डूब गया जीवन रोकर।

आगे आगे रहने को,
पीछे पड़ा हाथ धोकर।

धरती पर जन्नत पाने,
गये गुनाहों से होकर।

दरवाजे का एक सिलसिला तेरे दर पर आने तक।
डग छोटे और डगर कोस भर तेरे दर पर आने तक।

कदम कदम पर चैराहे है, भूल भुलैया मेलो की,
बाजारों में बिक वारहा है तेरे दर पर आने तक।

नहीं चाहिए छत महलों के घास फूस की छत अच्छी,
अमराई भी लुट जाएगी, तेरे दर पर आने तक।

बाढ़ ठहाकों को सिसकी को पार तैर कर करना है,
लगता है वह गुम जाएगी तेरे दर पर आने तक।

फिसलन भरा रास्ता दल दल की कीचड़ तेरे दर तक,
कई बार फिसला है कौशल तेरे दर पर आने तक।

कंटीली सरहदों के उस तरफ जायें कैसे ?
मुट्ठियां बन्द हों तो हाथ मिलायें कैसे ?

इन्तिहा गम की हो वे साख्ता हंस देता हूँ,

खुशी वे इन्तिहा हो अश्क छिपायें कैसे ?

तुम्हारी नजर की मानें या जुवां की माने,
नजर रूकने को कहे बता हम जायें कैसे ?

मखमली म्यान में पोशीदा एक खन्जर है,
वो बुलायें तो हम जान बचाये कैसे ?

आग जब घर को लगी बस्तियांॅ जलाने में,
पूछते है कि अब हम आग बुझाये कैसे ?

एक नुक्ता हूॅ अगरचे तो एक दुनिया भी,
कोई अनपढ़ हो मुकाबिल तो बतायें कैसे ?

तुम्हारे नूर से बेहोश हुये जाते है,
सामने तुम हो तो हम होश बचायें कैसे ?

वो सताता है तो एक गुदगुदी सी देता है,
कोई बतलाये कि हम उसको सतायें कैसे ?

मेरे घर से उसके घर तक मैने सदा बिछाए फूल।
भेजे गुलदस्तों में वापिस ताबूतांे में आए फूल।

ये दुनिया सुंदर बगीया हो यही सोच करके हमने,
पूरब से पश्चिम दक्षिण से उत्तर तक लगवाए फूल।

आए रोंदने बाग जानवर भाग गए भौंचक होकर,
तोपोें के गोलों से छूटे हरे धवल केसरिया फूल।

शैतां की नापाक कोशिशें फूलों को लड़वाने की,
उसके दो क्यों टुकड़ें होते दिल में जो होता एक फूल।

नफरत में और गुलदस्तों में आर पार की हो जाए,
"कौशल" बारूदों के ढेरो पर अब काबिज हो जाए फूल।

रिश्ते जितने घने हुये है।
उतने हम अनमने हुये हैं।

तुमने जो पत्थर मारे थे,
ये घर उनमें बने हुये हैं।

जितनी शाखायें काटीं हैं,
उतने मोटे तने हुये हैं।

गरदन कहीं झुका न देना,
सबके चाकू तने हुये हैं।

मन निर्मल मोती है जिनके,
तन मिट्टी से सने हुये हैं।

कपड़े उनके उजले लेकिन,
हाथ खून से सने हुये हैं।

कमरे में चुप्पी थी गलत बयानी थी।
आंखों में आंसू थे गजल बयानी थी।

चन्दा ने फैलाई चादर चमकीली,
फिर चन्दा धरती की छिपी कहानी थी।

धरती पन्ना बनी पहाड़ों की कलमें,
बहती नदियाॅं खुद तहरीर खानी थी,

मन्द हवा पत्तों की मरमर और तूफां,
वह सरगम कुदरत की मधुर जवानी थी।

कमरे में चुप्पी मेहमां चुप "कौशल" चुप,
चुहल कर रही कुदरत भर बेमानी थी।

जिक्र गेरों का किया मेरा वदन जलने लगा।
एक शोला क्या गिरा सारा चमन जलने लगा।

दूरियां आ ही गई लम्बे सफर में हम सफर,
जो सहारा था सफर का अब वजन लगने लगा ।

और भी कोई नजर में आ गया है आपको,
आपकी कुछ बेरूखी से जाने मन लगने लगा।

जिन्दगी को ब्याज की मानिन्द पन्जों में किया,
हंस के वह पहले मिलन को मूलधन कहने लगा।

चटकते हैं टूटते हैं अंग मारे दर्द के,
मुझको तो मेरा वदन मेरा वतन लगने लगा।

भूखों को गेहूँ की बाली दी मालिक।
आगे कर दी भीड़ लुटेरो की मालिक।

वोटों पर अधिकार झोपड़ी का वाजिब,
जीत नाम महलों के तो कर दी मालिक।

मेरे अन्दर एक मेमना डरता सा,
उसके अन्दर हिंसा शेरो की मालिक।

गांवों को चिड़ियां सा सुन्दर रूप दिया,
शहरों को बाजों की नजरें दी मालिक।

"कौशल" को कर दिया कैद दीवारों में,
सूदखोर के घर है छत गिरवीं मालिक।

मैं गुमसुम शहर दर शहर ढूंढता हूॅ।
जो दर गुम गया दर-ब-दर ढंूढता हूॅ।

सुबह भूख ने ही सुहानी निगल ली,
मगरिव में अब वह सहर ढूॅढता हूॅ।

बहुत थक गया हूॅ शहर में भटकते,
अब गांवों की जानिब डगर ढूंढता हूॅ।

जमानें की खुशबू ने अगवा किया जो,
हवाओं में वह हम सफर ढंूढता हूॅ।

गजल जो सुनाई थी महफिल में मैने,
मैं बेकार उनका असर ढंॅूढता हूॅ।

अब सितारों में कालिख सी नज़र आती है।

रात अमावस से अधिक स्याह नज़र आती है।

पीढ़ी दर पीढ़ी रहे आपके हाथो चाबुक,
पीढ़ी दर पीढ़ी मेरी पीठ नजर आती है।

ले गए छीनकर देने का भुलावा देकर,
इनायत एक तिजारत सी नजर आती है।

तुम्ही ने ख्वाब दिखाए जो हाथ आ न सके,
आंख की रोशनी जाती सी नज़र आती है।

तेरी जुल्फो के अंधेरे है वहां एक "कौशल",
मौत ही जहां अब उम्मीद नज़र आती है।

मेरे हाथ कटे होने का मैं इतिहास बताता हूँ।
कभी कलम ने सच बोला था जिस पर मैं इठलाता हूँ।

महफिल महफिल भटक रहा मैं घर के कारण सन्यासी,
एक बवण्डर घर में है मैं जिससे दहशत खाता हूँ।

टुकड़े टुकड़े बांट रहा मैं अब वजूद का क्या करना,

कोई खन्जर है जेहन में जिससे कटता जाता हूॅ।

मैं एक ऐसा मोहरा हूॅ जो लड़ता स्वयं खिलाड़ी से,
है बिसात एक जाला जिसमें और उलझता जाता है।

तुमने मुझे सुना अच्छा है पता पूछने मत आना,
घर में जब भी जाता हूॅ सिर नीचा करके जाता हूॅ।

कुछ दिन पहले इस किताब में
महक रहे थे बरक नए
जिल्द साल तुम दो जवाब
वो सफे सुनहरे किधर गए
जहां इत्र की महकरवां थी,
जलने की बू आती है,
दहशत वाले बादल फिर क्यों
आसमान में पसर गए
बूढ़ा होकर इन्कलाब क्यों
लगा चापलूसी करने,

कलमों को चाकू होना था,
चम्मच में क्यो बदल गए
बन्धे रहेंगें सब किताब में
मजबूती के धागे से
एक तमन्ना रखने वाले,
बरक बरक क्यों बिखर गए
जिल्दों से नाजुक बरफों को
नई तहरीर बचाएगी,
बदलेंगें मजमून पुराने,
गढ़तें होंगे लफ्ज नए

मैं हूॅ वो मजमून जो बस हाथ ही मलता रहा।
मेरा जो उनवान है गैरों पें वो डलता रहा।

घर से कबरिस्तान की दूरी बहुत ज्यादा नहीं,
उसको तय करने मुसाफिर उम्र भर चलता रहा।

खत्म होगी न सुराही आखिरी हिचकी तलक,
कतरा कतरा रात का पीने दिया जलता रहा।

खुदखुशी से जिन्दगी हर पल बचा कर पाई है,
वक्त जलती शमा है, हर पल यहां जलता रहा।

बंदू पानी की बरफ के पास रह पाई नहीं,
बर्फ का टुकड़ा पकड़ने बंूद को गलता रहा।

तुझसे डरकर ही साथ रहता हूॅं।
इसको जीवन का साथ कहता हूॅं।

जिनको दर से बदर किया जाए,
तेरी खातिर मैं उन्हें सहता हूॅं।

तेरी दहशत मुझे चलाती है,
अपने आप मैं कहां रहता हूॅं।

तेरे पहलू में मुस्कुराता हूॅं,
तेरे ख्यालों को झटक देता हूॅं।

आके अहसान करदे "कौशल" पर,

मौत से बुददुदाता रहता हूॅ।

शमा न थी शमा का अक्स दरपन में नजर आया।

हुआ परवाने को धोखा वो टकरा के न जल पाया।

हमारे बीच का झीना सा परदा बन बया पर्वत,
मैरा मन बेडियों में था न परदा पार कर पाया।

हमारे पास तक परदे से तेरा नूर आता है,
न परदा तू हटा मैं होश रख पाया, न रख पाया।

तुम्हारे पायलों की रूनक झुन झरने सुनाते थे,
जेहन के शोर में, मैं रूनक झुन को सुन नहीं पाया।

तुम्हें जो छू लिया तो खाक मैं हो जाऊंगा एक दम,
मैं दूरी इसलिये दरम्यान अपनी कम न कर पाया।

बदनुमा चेहरे हुए है आईनों पर गर्द है।
है रियाया अधमरी और रहनुमा बेदर्द है।

मंका गिरवी रख दिया कुछ मौज मस्ती के लिये,
घर के मालिक देख नर्द पीढ़ी का चेहरा जर्द है।

कर लिया तैयार फन्दा एक काज़ी के लिये,
सुनते है काजी रियाया का जरा हमदर्द है।

गरमियों की दोपहर में दान देंगें कम्बलें,
अलावों पर राख डालेंगें ये मौसम सर्द है।

कर अमीरी का गुमां इस घर का सोना बेचकर,
ना खुदा "कौशल" के घर का इस कदर हमदर्द है।

कदम गिनना नहीं बढ़ाना है।
धुंध को खुरच कर मिटाना है।

खुशी है तख्त नशी मखमल पर,
जमी पर भी उसे बुलाना है।

गुल मोहर कैद में है गमलों की,
जंगलों में उसे सजाना है।

नींद से खींच कर हमें सपना,
तपती रेतों के बीच लाना है।

ठोकरों से डगर न बदलेंगें,
ठोकरों से डगर बनाना है।

आस्मां को बना दिया नुक्ता,
फिर उसे आस्मां बनाना है।

दिये से अन्धेरा तो जायेगा,
अन्धेरे को दिया बनाना है।

नशा बिखरा दिया हवाओं में,
नशे का सिलसिला मिटाना है।

लूट लिया जब उसका सब कुछ।
उसका आंसू नही बहा।
जब उसको बेईमान कहा तो,
वह आपे में नही रहा।
जो कबीर को कहना था वह,
एक झटके में कह डाला,
अब तुम निर्णय करते रहना,
सही कहा या गलत कहा।
पढ़े फारसी साफ कर रहे है,
जाहिल की कारों को।
पहले सा उस्तादों का अब,
वैसा रूतबा न ही रहा।
तुमकों कहां तमीज राम की,
कर्मकाण्ड के व्यापारी।
जब तक तुमने खाते खोले,
तब तक तुलसी नहीं रहा।
उसके हांथों के कम्पन के,
काबिज उसकी उम्र नहीं।
उम्र बीस अस्सी का दुखड़ा,
"कौशल" ने क्या नही सहा।

बार बार पिन्जरे में पन्छी आता है।
आजादी से जाने क्यों डर जाता है।

आजादी भी कहीं गुलमाी ही न हो,
आजादी से वह घबरा सा जाता है।

एक जान हर तरफ शिकारी दिखते है,
जालों का एक उलझा जंगल पाता है।

नहीं चीख से कोई मतलब जालों को,
उसका नाजुक बदन उन्हें भर भाता है।

है शिकारियों के जगल में एक पक्षी,
चिल्लाहट पर जंगल हंसता जाता है।

आसमान की छीना झपटी।

सेतू नजर हटाता जा।

धरती पर बिखरे दानों से,

अपनी भूख मिटाता जा।

कुर्सी पर मत देख के◌े◌ंचुए,

बिना रीढ़ की हड्डी के।

जिन्दा तुझको रहना है ता,

अपनी कमर झुकाता जा।

तू आदम है तुझे स्वर्ग से,

सदा धकाया जाएगा।

जन्न्त के मत ख्वाब देख तू,

केवल धक्के खाता जा।

नहीं◌े देखता तू साहब का

चश्मा कितना मोटा है

उनको तू मोटा दिखता है,

कितना ही रिरियाजा जा।

तेरे बच्चों को आजीवन,

लाते ही तो खाना है।

“कौशल” जब वे रोटी मांगे,

तू उनको ललियाता जा।

खुद खुशी से बचा के रखियेगा।
जिन्दगी को सजा के रखियेगा।

उड़ गये पंछी उनकी यादों के,
पंख सुन्दर बचा के रखियेगा।

भेड़िये महफिलों में आयेंगे,
जिस्म उनसे बचा के रखियेगा।

जिल्द गर तार तार हो जाये,
कुछ तो पन्ने बचा के रखियेगा।

खर्च यादें न करें महफिल में,
वक्ते तनहा बचा के रखियेगा।

नई सुबह के लालच में सूरज गिरवी रख आये थे।
बदलें में जो ले आए वे अपने ही कुछ साए थे।

मेरे अपराधों के चर्चे महफिल महफिल गली गली,
वो तो कन्फेशन में मालिक मैनें तुम्हें गिनाएं थे।

हमने सिंहासन पर भगवन,रखा तुम्हे पूूजा करने,
हमको क्या मालूम था तुम भी शासन करने आये थे।

इतनी भीड़ यहां घिर आई वह खुद ब खुद कुछ शक है,
लगता है जंगल में तुमने फिर टांके लगवाए थे।

घनेरी रात में झिलमिल दिये की पांत दीवाली।
है रेगिस्तान में कुछ बंूद की बरसात दीवाली।

पुराने चीथड़ों के साथ जिनकी साल गुजरी है,
उन्हें साबुत पुराने वस्त्र की सौगात दीवाली।

प्रतिदिन फोड़ना पत्थर तुम्हारा साथ रातों में,
हमारा दिन दशहरा और हमारी रात दीवाली।

हमारा झुग्गियों में घर, तुम्हारा आस्मां पर घर,
तुम्हारी रोशनी से हम मना लेते है दीवाली।

हरित वर्षा, शरद सरसों, खिले है ग्रीष्म में टेसू,
है पूरे साल देखो रंगो की बरसात दीवाली।

साथ छोड़ता है गर्दिश में परछाई की तरह।
अच्छे दिन का दोस्त जमाना परछाई की तरह।

भरी दोपहर में राहत दी फकत पसीने ने,
रही बहारें सुबह शाम की परछाई की तरह।

चांद सितारे आसमान में या ख्वाबों में दिखे,

हाथ नहीं आए जीवन भर परछाई की तरह।

जो मशाल की तरह सफर में आगे को चलता,
नहीं मिला वह चला हम सफर परछाई की तरह।

वहीं हुई महसूस जिन्दगी जहां मौत ने छुआ,
रही रौशनी "कौशल" के संग परछाई की तरह।

रात सरकती धीरे धीरे सन्नाटा गहरा है।
कहीं कोई आवाज नहीं है चुप्पी का पहरा है।

एक चीख उस सन्नाटे में कभी कभी आती है,
वरना नींद लगी कुदरत को शहर हुआ बहरा है।

बातें करने कोई दूसरा साथी यहां नहीं है,
जाने कब सुबह आयेगी, वक्ता कहां ठहरा है।

भेद मिटा अन्दर बाहर का अन्धकार होने से,
नही किरण कोई प्रकाश की अन्धकार गहरा है।

दीपक का अस्तित्व अन्धेरे से सूरज से नहीं,
अन्धकार मिटकर दीपक को खुद देता सेहरा है।

आंखे बनी फलक है, करती है भूख लेखन।
कभी बर्फ कभी शोले कभी नीर और कभी धन।

बानजरिये कचरा घर हैं दो कौम इस जहां में,
एक फेंकती है जूठन एक बटोरती है जूठन।

दो रोटियों की किस्त भी अलग अलग लिखी है,
एक उघड़ रही है ज्यादा एक सजी है जैसे दुल्हन।

एक कवच ने मार डाला तलवारे दस्त बनकर,
न कवच को लेके आते न किसी से होती अनबन।

है कान बन्द सबके और शोर बहुत ज्यादा,
तहजीब का फलसफा "कौशल" अरण्य रोदन।

उनके सुकंू का सारा समान उनके घर है।
एक मारने को हंटर पिटने को जानवर है।

या खूं करेगा मेरा या खुदखुशी करेगा,
मेरा जमीर मुझसे नाराज इस कदर है।

बढ़ चढ़ के कर रहे है सूरज की जो वकालत,
सूरज से परे पूरे आकाश पर नजर है।

जेहन से नही जाती मेरे चाहते हुए भी,
तेरी याद रिसने वाले एक घाव की तरह है।

सांसे है बहुत भारी ओर जिस्म एक कुली है,
मीलों नहीं है छाया ता जिन्दगी सफर है।

ऊंचा होकर नीचा हो।

तू फल भरा बगीचा हो।

फल रस भरे तभी होंगे,
बचपन में जब सींचा हो।

बाहर धूल झिझकती है,
अन्दर बिछा गलीचा हो।

नाव तभी बच पायेगी,
पानी अगर उलीचा हो।

वह तो ठोकर खायेगा,
आंखों को जो◌े मीचा हो।

वीणा सुमधुर बजती है,
तार अगर जो खींचा हो।

कोई चाकू जरूा पीठ पर अड़ा होगा।
उनके लड़ने का यही मुद्दुआ रहा होगा।

दर हकीकत मुझे झगडालू नजर आता है,
जाहिरा चुप है वो अन्दर झगड़ रहा होगा।

रोआं रोआं जो चमकता है सितारे की तरह,
बयान किस्से मोहब्बत के कर रहा होगा।

जमीं पे टूटके तारे बिखर गए "कौशल",
झुका झुका है वो टुकड़े उठा रहा होगा।

फिजां सहमी है शाख हिलती नहीं।
कड़की है आस्मां में बिजली कहीं।

शिखर ने रोक लिया है पानी,

निचले हिस्सों में है नमी भी नहीं।

सूखा देखा तो फट गया सीना,
धरती मेरे लिये फटती भी नहीं।

झोपड़ी में न छत न दरवाजा,
वहां छुपने के लिए कुछ भी नही।

खोखले तने गिर ही जायेंगे,
हवा लिहाज तो करती ही नहीं।

गरजता है कहीं बरसता है,
बोलों बादल सियासत है कि नही ?

बेलगाम धार पानी की,
बरसती है तो फिर रूकती ही नहीं।

धरती सूरज के बीच बादल है,
फिर भी दोनों में इश्क है कि नहीं ?

बढ़ने की कोशिश न करना अगर पीठ पे हाथ नहींे।

हाथों के तू पैर पकड़ने फिर कुछ करना बात नहीं।

किसी भीड़ में शामिल होजा जो आगे को बढ़ना है,
फिर सिर उनका पांव तुम्हारे और ठहरना कहीं नहीं।

बहुत मिसालें है वेदों में खुद की गलती ढ़कने को,
उनकी गलती को रोशन करने का मौका छोड़ा नहीं,

दुश्मन को तू दोस्त बनाले और दोस्त को धोखा दे,
भेदभाव का दोष लगे न और दुश्मन भी रहे नहीं।

भूल सके तो कौशल लमहें गुजरे साथी याद न रख,
सदा देख उगते सूरज को परछाई को कभी नहीं

कुछ दूरी तक तो हम दोनों साथ चलें।

प्यास और सन्तुष्टि दोनो साथ चलें।

कुछ सुन्दर कुछ साधारण सा चेहरा हो,

सपने कुछ दुनिया दारी के साथ चलें।

शहर और जंगल के बीचों बीच रहें,
रागी मन बैरागी मन के साथ चलें।

कहने को दूरी हो इतने पास रहो,
झिझक और बेबाकी पन भी साथ चलें।

चले मिला कर कन्धे कन्धों पर जायें,
दोस्त और दुश्मन तब दोनो साथ चले।

कलम कागच पे कुछ गाये तो गजल होती है।
फिजा में परिन्दे गायें तो गजल होती है।

आज के मकां कल के खण्डहर की नीवें है,
साथ कुछ पेड़ लगायें तो गजल होती है।

देह से इतना डर कि नफरत ही भर दी है,

हाथ से हाथ मिलायें तो गजल होती है।

रब ने आकाश पे तारों से गजलें लिख दी है,
जमीं पर फसलें भी गायें तो गजल होती है।

समन्दर गजल से लवरेज गुनगुनाते है
चलें जब मन्द हवायें तो गजल होती है

पक्षी मांगे भीख बहारों के आगे।
बैठे है दरबान दयारोें के आगे।

नैहर ने कर दिया हवाले डोली के,
मर्जी चलती नहीं कहारों के आगे।

बन्द महल में खिड़की भर जो मिले खुशी,
नजर नाप ले चांद नजारों के आगे।

मौके मिले गुलाम नजर नीची करके,

वरना क्या थी जगह सितारों के आगे।

खुशी मिली अनुशासन की हथकड़ियों में,
जीवन गिरवी रहा सहारों के आगे।

वो दरिया गुम गया समन्दर में कौशल,
इठलाता था कभी किनारों के आगे।

अगर एक पहचानी महफिल में आ जाये अन्जाना।
उससे ऐसे मिलना मानों वर्षो से हो पहचाना।

मैं अपने को रहा ढंूढता महफिल महफिल गली गली,
नहीं मिला मैं दरपन तक को अपने से ही बेगाना।

नहीं मिला मै तुमको मुझमें थककर तुम झल्लाते हो,
मुझको ही जीवन भर मैं भी रहा ढंूढता बेगाना।

नहीं जलाती परवानें को शम्मा तू सुन ए पगले,
जिसने शम्मा रोशन की है जला उसी से परवाना।

नहीं मिलेगा आसमान का रब सर ऊँचा करने पर

रब को अगर ढंूढना हो तो धरती तक तुम झुक जाना।

सड़क खराब है इल्जाम न उस पर आए।
कैफियत ढालनें वालों से तलब की जाए।

बहुत सुकून है सूरज को उसके ढलने पर,
किसी तरह से सही दिन गुजार तो आए।

नशे में है तो रहे कम अजकम जिन्दा तो रहे,
होश में खुदखुशी करने पे न उतर आए।

मोम तो मोम है पत्थर में बदल जाएगा,
हद से ज्यादा न उसे और तराशा जाए।

खुदा इबलीस से लड़ता है बारहा, उलझे,
फकत कौशल को ही मोहरा न बनाया जाए।

पता पूछ लेना मेरा पहले मुझको गुम जाने दो।
तुम को सब कुछ दे दूंगा पर न कहना तो आने दो।

तुमसे बहुत बात करनी है लफ्ज गले में अटके हैं,
मन की उथल पुथल हंगामें तुम पहले थम जाने दो।

मन्दिर मस्जिद चर्चो का फैलाव रोक कर क्या करना,
फर्क इबादत गाह मुसाफिर खाने का मिट जाने दो।

ऊंचाई को जमींदोज कर लम्बाई में बदलेंगे,
दबे हुये जज्बातों को एक मुट्ठी तो बन जाने दो।

नहीं चाहता झुकंॅॅू तुम्हारे आगे नीचे रहने पर,
नहीं झुकाऊंगा मैं पलके भले कमर झुक जाने दो।

जब भी मैं तेरे पास आता हॅू।
रूख तेरा बेरूखी का पाता हॅू।

तुझसे रिश्ता पुराना टूट गया,
अब दरारों को मैं छिपाता हॅू।

वक्त सब छीन ले गया मुझसे,
किस लिये उससे थरथराता हॅू।

लाॅ चरागों की जरा तेज करो,
धुंधले रूख आसपास पाता हॅू।

अब सहारा न मांग “कौशल” स,े
खड़े होने में डगमगाता हॅू।

ये मुद्दा क्या इबादत से कभी भी हम नहीं लगते।
इबादत करने वाले भी गमों से कम नहीं लगते।

मिलेंगी हूर जन्नत में हमें बहकाओं मत वाइज,
जहां को छोड़ने वाले भी खुश हरदम नहीं लगते।

हमारी मौत को हम हमसफर के रूख दे पड़ते है,
हमें बहलाओं मत कि हम अभी बेदम नहीं लगते।

कि कर लूॅ बन्द आंखे इस कदर दुनिया नहीं देखी,
सुना है जो अभी तक गीत के सरगम नहीं लगते।

ये रिश्ता कौन सा है कि शरीके जिन्दगी होकर,
लगे है सीने से पर हम उन्हें हम दम नहीं लगते

दिल में सुन्दर सी गजल जब कुनकुनाती है।
चाशनी सी रगो में चक्कर लगाती है।

अकेला रहने नहीं देती कभी मुझको,
पास जाता हॅू तो हंसकर भाग जाती है।

जब कभी नाराज होता हंॅू तो वो हंसकर,
छेड़ देती है मुझे और मंुह चिड़ाती है।

उसकी गरदन को झुकाने कमल लाता हॅू,
कमल झुक जाते है वो जब सर उठाती है।

वक्त जब लगता है कौशल आग के माफिक,
हाथों से छूकर उसे पानी बनाती है।

भले दुनिया के दर्द दे मालिक।
कुछ तो सपने भी बख्श दे मालिक।

है तो ईमान बहुत सा मुझमें,
नहीं उसका बजार है मालिक।

करें दुश्मन से प्यार क्या मतलब,
मेरी दुश्मन शराब है मालिक।

रिश्ते बनते है आज नफरत से,
प्यार पन्नों में दफन है मालिक।

गांव चिड़ियों की तरह दिखते है,
शहर बाजों की तरह है मालिक।

ख्वाब के इतने पास न जाएं।
कि वे कुछ खौफनांक हो जाएं।

हवा लायें जो मन्द मन्द बहे,
कोई तूफान न उठा लाएं।

लुका छिपी का खेल जीवन हो,
कब्र तक तआल्लुकात न जाए।

नहीं मुमकिन है बुतों में जुम्बिश,
गुजारिश फिर भी पेश कर आएं।

दुनिया कौशल नहीं बदलने की,
कहीं क्यों आएं और क्यों जाएं।

महफिल में सूनापन चुपके से आ जाता है।
और भरी महफिल से अगुआ कर ले जाता है।

झड़ता पत्ता कोंपल को जीवन के बारे में,
गुजरे पल से गुजरे पल का सफर बताता है।

परछाई पैगाम प्यार का लेकर आती है,
लड़ते हैं जब लोग अक्स उनका मिल जाता है।

आग धधकती सीने में जब उसको दिखती है,
मयखाने में पी पीकर वह आग बुझाता है।

जब जब मार पड़ी अन्दर एक गुफा बनाई है,
उन्हीं गुफाओं को हुजूम अब मुझे चलाता है।

गिद्ध मंडराने लगे

भेड़ियों के हुक्मनामें फलक तक आने लगे।
झुण्ड चमगादड़ बना सूरज को धमकाने लगे।

सफर के आगाज पर थी तितलियां आकाश में,
दो कदम आगे चले तो गिदध मंडराने लगे।

भूख से मरते हुए इन्सान का घेराव कर,
कीमतें सब खंू जिगर गुर्दे की बतलाने लगे।

रोटियांे जूते में लेके मदारी आया शहर,

सुन मुनादी बन्दरों के काफिले आने लगे।

क्या सबब है तेज रफ्तारी का पूछा रोककर,
एक सिक्के की तरफ कौशल सभी जाने लगे।

जेरे बर्फीली खामोशी रह कर जरा दिखा।
अहसानों के छांव तले खुश रह कर जगा दिखा।

धू धू जलते किसी मकां में रहना मुमकिन है,
हर पल जली नजरों के संग रह कर जरा दिखा।

सिर पर छाता हो पैरो को धूप नहीं लगती,
नंगे पैर धूप में मीलोें चल कर जरा दिखा।

सीने पर खन्जर सह लेना नहीं बहुत मुश्किल,
घर का मेहमां जब रकीब हो सह कर जरा दिखा

एक भंवर ही काफी है नीचे ले जाने को,
कदम कदम पर भंवरों में तू वह कर जरा दिखा।

सच का घनुष चड़ा देखा।

सच ही तना खड़ा देखा।

मेहनत करने वालों को,

कद से बहुत बड़ा देखा।

एक उधारी की चादर,

नीचे सब उजड़ा देखा।

सब्ज पेड़ था सपने में,

जागा तो उखड़ा देखा।

सिसक सिसक पत्थर रोया,

मेरा जब दुखड़ा देखा।

खौफ अब संगतराश खाते है
उनके बुत ही उन्हे डराते है

टोपिशं ढलती है गलीचों में
जूते जब भी खनक के आते है

खुद से डरकर ही हम कभी मन्दिर
कभी मयखाना चले जाते है

गुल चरागों को किया जाता है
जब भी अन्धे शहर में आते है

घर से बेघर हुए अनजानी डगर चलते रहे
एक गुजरे हुए लमहे के साथ चलते रहे

बड़े शहर में कोई अपने गांव का आया,
वहां दुश्मन था यहां साथ-साथ चलते रहे

अगरचे टूट चुकी डोरियाॅ हुई मुद्दत,
हैं भूखी उंगलियां हम उनके लिए चलते रहे,

किसी गुनाह का ज्यादा ही बोए लगता है,
नसीहत न सुने वाईज की ओर चलते रहे

किसी अन्धड़ ने उसे रौंद दिया है "कौशल"

कहो खुशबू से वो झोंको के साथ चलते रहे

शारे से इतना घर भरा "कौशल"
गीत टकराने लौट आते है

रातभर मैं तुझमें खुद को ढंूढता रहा।
जमीं बजर थी और कोंपल ढूंढता रहा।

था बहुत अरमान बस्ती तक निकल जाऊं,
जिन्दगी भर घर की सरहद ढंूढता रहा।

उनकी परछाई से पूरी बज्म ढक गई,
बेवजह छाया में उनको ढंूढता रहा।

झोपड़ी के पास मंडराता रहा सब दिन,
रब को वाइज इबादत में ढंूढता रहा।

कवच आया बाद में तलवार आ गई,
कटा सिर दोनो में रिश्ता ढंूढता रहा।

बहुत हठी ईमान मनाना मुश्किल है।
उसको बुत से रब पर लाना मुश्किल है।

एक इबादत है पीकर के होश रहे,
बिना पिये अन्दाज लगाना मुश्किल है।

आंसू और समन्दर दोनो खारे है,
और दोनो की याह लगाना मुश्किल है।

बच्चे की किलकारी मां की दबी खुशी,
उसे तकल्लुफ से ढक पाना मुश्किल है।

मेरा बच्चा सो जोय तो मैं लेटंू ,
बिन लोरी मेरा सो पाना मुश्किल है।

एक बार सूरज की जानिव पीठ हुई,
अब छाया से पिण्ड छुड़ाना मुश्किल है।

जब से आतिश कैद हुई जल्लादों की,
आदम के घर का बच पाना मुश्किल है।

जाल में उलझा हुआ हूँ कुछ नहीं कर पाऊंगा।
फड़फड़ाऊंगा अगरचे तो उलझता जाऊंगा।

चाहता तो मै भी हूँ कि आप की छवि साफ हो,
साफ करने गन्दगी नीचे उतर न पाऊंगा।

इस समय सहमा हुआ हूँ जुल्म चाहे जो करो,
सहते सहते पत्थरों का एक बुत हो जाऊंगा।

मुझको जब चाहे बुलाओं और अपमानित करो,
देखना मैं इस तरह एक जरूरत बन जाऊंगा।

मैं धुंधलका शाम का मुझको कहीं मत ले चलो,
दिन मेरा दुश्मन है और मैं रात में खों जाऊंगा।

धुआं धुआं सी महफिल है।
सुलग रहा कोई दिल है।

दर्द दवा कर हंसता है,
वह अपना की कातिल है।

वदन संगमरमर का है,
इसीलिये पत्थर दिल है।

छूटी दुनिया वह यादे,
महबूब में गाफिल है।

एक पहाड़ सा जीवन है,
उसपर चड़ना तिलतिल है।

सूरज ढोकर लाला हुआ
दिन भी कितना बोझिल है

मरना ज्यादा कठिन नहीं,
जीना ज्यादा मुश्किल है।

एक जिबह होने वाला, कितनों की भूख मिटाता है।
घाव झेलते झेलते उसका कुनबा पलता जाता है।

आग छलकते प्याले को ही दिल की आग लपकती है,

कई ठोकरे खाते है तब लब तक प्याला आता है।

घर की आग नही कम होगी, पूरा शहर जलाने पर,
कम कर आग सुलगती दिल की देख हिमालय आता है।

नहीं नींद पर उसका हक और नही होश पर उसका हक,
हर कठपुतली की डोरी को उसका पेट चलाता है।

लहर किनारे पर लादेगी, या फिर गले लगा लेगी,
"कौशल" का अब मौजो से ही पूरे जीवन नाता है।

मिट्टी जो मिटी मिटके कुछ मटके तो बनेंगें।
मटके जो मिटे मिट्टी से ज्यादा क्या बनेंगे।

मंजिल की दौड़ में जो बीच में ही रह गए,
न दौड़ते रहे तो वे रोड़े की बनेंगे।

रब को तलाशना है तो ढूंढों सलीब पर,
जो पास है मन्दिर के भिखारी ही बनेंगे।

उपदेश निकलता है गुनाहों के भार से,
बन्दों की जकातों से घर वाईज के बनेंगें।

डरती है कौम संगतराशों की बुतों से,
"कौशल" इन पत्थरों के ही भगवान बनेंगे।

ये इंगलिश मदरसों की मंजिल नहीं है।
राशन की लाईन है महफिल नहीं है।

है उसका अधूरा भरा पेट शायद,
इसी से किसी के मुकाबिल नहीं है।

सियासत नही पेट भर देगी खाना,
जो भूखा है रहने के काबिल नहीं है।

उन्हें तैरते तैरते हारना है,
उनके लिये कोई साहिल नहीं है।

फांका कसी से ही "कौशल" मरा है,

हकीकत सियासत की फाईल नहीं है।